# जननी जन्म भूमिश्च.....

**श्रीमती टी. एस. नवमी,** वैज्ञानिक,
सी एम एफ आर आइ, कोचीन

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है । हमारी जन्मभूमि भारत या भारतवर्ष सबसे बडी है । भारत केवल एक देश ही नहीं बल्कि सारे संसार के पवित्र आचरणों का नमूना है । भारत किसी स्थान का ही नाम नहीं बल्कि मनुष्यों के भीतरी गुणों का प्रतीक है । प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति ऊँची थी - महान थी । यहाँ के ऋषि-मुनियों और ज्ञानी - विज्ञानियों ने जो आध्यात्मिक तथा भौतिक ज्ञान की कल्पनएँ जगाई - मानव में ममता, मैत्री और करुणा की भावना जगाई, वह भारत की आत्मा है । प्राचीन भारत के प्रेम, हिंसा और समता उज्वल थी जैसे जहाँ प्रेम भरी आवाज सुनाई वहाँ भारतीयता को देखा जा सकता था ।

संस्कृति किसी देश, समुदाय या जाति की आत्मा होती है । संस्कृति से ही उस देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है, जिनके सहारे वह अपने आदर्श, जीवन मूल्य आदि का निर्धारण करता है । प्राचीन भारतीय ग्रंथों में 'संस्कृति' का संबंध 'संस्कार' से माना गया है । भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र आध्यात्मिकता है । त्याग और तपस्या उसके प्राण हैं । अर्थ में त्याग, काम में संयम, धर्म में निष्ठा, गुरू का सम्मान, पारिवारिक जीवन की महत्ता वर्णाश्रम व्यवस्था आदि भारतीय संस्कृति के मान्य एवं प्रमुख अंग हैं । लेकिन भारतीय संस्कृति का लक्ष्य मनुष्य का सामूहिक कल्याण है । भारत की आत्मा की आवाज़ शान्ति की आवाज़ है । मानव धर्म का प्रचार करना भारत का व्रत है । सत्यनिष्ठा और न्याय के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना भारत ने विश्व को सिखाया है ।

भारत के पर्वत, निर्झर, नदियाँ, वन, उपवन, हरे-भरे मैदान, रेगिस्तान, समुद्र-तट इस देश की शोभा बढ़ाते है । भारत एक अत्यंत प्राचीन देश है । यहाँ अनेक महापुरुष हो चुके हैं जिन्होंने मानव को संस्कृति का पाठ सिखाया । यहाँ ऋषि हुए, जिन्होंने वेदों का गान किया । राम हुए न्यायपूर्ण शासन का आदर्श स्थापित किया कृष्ण हुए कर्म का पाठ सिखाया । महावीर और बुद्ध हुऐ अहिंसा की शिक्षा दी, बड़े बड़े प्रतापी सम्राट् हुए जिनमें विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, अकबर आदि की प्रशंसा इतिहास ने की है ।

आधुनिक काल में गरीबों और पराधीनों का सहारा महात्मा गाँधी, विश्व मानवता के प्रचारक रवीन्द्रनाथ टागोर, जवहरलाल नेहरु और स्वामी विवेकानंद इसी देश में जनमे थे ।

15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई । 26 जनवरी, 1950 को भारत संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न प्रजातंत्रात्मक गणराज्य बना । इसके उपरांत भारत ने अपनी पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई और आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक प्रगति के लिए तीव्र गति से कदम बढ़ाना शुरू किया ।

आधुनिक भारत वैज्ञानिक भारत कहलाता है । आज़ादी मिलने के बाद भारत ने धीरे धीरे कई आश्चर्यजनक उन्नतियाँ प्राप्त की । विज्ञान ने मनुष्य को भौतिक ऐश्वर्य और संपन्नता, चिकित्सा जगत्, शिक्षा और मनोरंजन आदि में बडी सहायता की । लेकिन भारत में वैज्ञानिक विकासों के साथ अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न हो गयी हैं । विज्ञान की सहायता और आविष्कारों से भारत उन्नत श्रेणी में पहूँच गयी है । आज़ादी के 50 साल के बाद देश के सामने अब अनेक संकट खडे हैं । लेकिन तब और अब में एक फर्क है । स्वतंत्रता संग्राम के समय देश में एक गाँधी था जो शहर-शहर घूमकर जनता को इस संग्राम की ओर उत्प्रेरित कर रहा था । हज़ारों स्वतंत्रता सेनानी थे । नेहरू-पटेल-आज़ाद सरीखे नेता थे । ये सभी नेता और स्वतंत्रता सेनानी अपने-अपने स्तर पर साँप्रदायिकता से लड रहे थे । आज अगले शताब्द में पाँव रखते वक्त साँप्रदायिकता सडकों पर स्वच्छंद घूम रही है और धर्मनिरपेक्ष ताकतें खुद को असहाय कर रही हैं । इस समय हिन्दु साँप्रदायिक ताकतें हैं, मुसलिम साँप्रदायिक ताकतें हैं और इसमें सिख साँप्रदायिक ताकतें सहित हर किस्म की फँसाती ताकतें शामिल हैं । यही देश की सबसे बडी चुनौती है । देश से साँप्रदायिकता और जातिवाद की जडें खोदकर फेंक देनी हैं । नहीं तो हमारी हर विकास-योजना और निर्माण-परिकल्पना व्यर्थ ही सिद्ध होगी । इसमें एक विचित्र स्थिति यह है कि जो लोग जातिवाद और साँप्रदायिकता तथा अनेक कुरीतियों का ज़ोर-ज़ोर से विरोध करते हैं, वे ही अपने घरों में और समय आने पर अपने रिश्तेदारों के बीच जातिवाद और साँप्रदायिकता का दिल खोलकर समर्थन करते हैं । यह हमारे समस्त अस्तित्व को चूसे जा रही है ।

एक समय था जब भारत में नारी का स्थान बहुत ही आदरणीय था । भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष में नारी ने पूरा सहयोग दिया । सामाजिक, राजनीतिक, सेना, पुलिस और अन्य संगठनों में नारी ने अपने को पूर्ण सफल सिद्ध किया है । फिर भी आज समाज में नारी की समस्याएं अनेक हैं। दहेज की समस्या उस में एक है और यह कुप्रथा भारतीय समाज की कालिमा है । नारी की शिक्षा भी कई प्रांतों में नहीं है । आधुनिक भारत में लडकी को भ्रूण में मार डालते है और जन्मने के बाद भी बहुओं को जलाते है । जब तक नारी का उत्थान नहीं होगा, तब तक देश और समाज की

भी उन्नति असंभव है ।

*बेकारी की समस्या एक व्यापक समस्या है ।* भारत में बेकारी का मूल कारण है- वर्धित होनेवाली आबादी । शिक्षा का अभाव भी बेकारी का कारण बताया जाता है । किंतु यह बात सत्य नहीं है । यहाँ बेकारी की संख्या में शिक्षित लोगों का प्रतिशत अधिक है । औद्योगिक या व्यवसायाधिष्ठित शिक्षा के अभाव में यहाँ शिक्षित लोग बेकार हैं । सरकार ने कई योजनाएं इनकेलिए खींची है फिर भी बेकारी देश की बडी चुनौती है । भारत की शिक्षा-पद्धति में भी सुधार की आवश्यकता है ।

जनसंख्या बढती रहती है । आबादी को नियंत्रित करने पर ही बेकारी कम हो जायेगी । बढती हुई जनसंख्या ने देश के सामने गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा, भूखमारी आदि अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं । भारत को सुख, समृद्धि और उन्नति के शिखर की ओर ले जाना है। यदि बेरोज़गारी आदि समस्याओं से छुटकारा पाना है, उसका एकमात्र इलाज है - जनसंख्या की वृद्धि को रोकना । स्वतंत्रता के बाद इन सभी समस्याओं को मिटाने की जो कल्पनायें की थी, भ्रष्टाचार रूपी दैत्य ने हमारा स्वप्न सत्य सिद्ध नहीं होने दिया है । भ्रष्टाचारी लोग भारत में सर्वव्यापी हैं ।

भारत समाज में और भी एक दानव है वही है छुआछुत । मनुष्य-मनुष्य को जानवर की तरह मानते हैं । सरकार ने अनेक अछूतोद्धार योजनाओं का आसूत्रण किया है । इन बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयास न करें तो हमारी हर विकास-योजनायें और निर्माण-परिकल्पनायें व्यर्थ ही सिद्ध हो जाएंगी । आखिर माँ के प्यार में भेदभाव नहीं है । यदि हम देश में माँ का प्रतिरूप देखें तो सारी असमानताएं नष्ट हो जाएगी। जहाँ धर्मग्रंथ व गुरुमुख मौन हो जाता है वहाँ माँ की नीति शासन करेगी..... ❑

"..... मैं समझता हूँ स्वप्न जीवन के श्रेष्ठ अंशहैं । केवल एक अनुभूति ही नहीं, वरन इस बात का पूर्वाभास कि मैं कल कोई नया अविष्कार करने जा रहा हूँ, किसी भी वैज्ञानिक को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है । चाहे वह अविष्कार करे या न करे । किसी वस्तु को प्राप्त करने की अपेक्षा से पाने की अभिलाषा जीवन की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है । यह ऐसा संघर्ष है जो समान्य है ।"

- चन्द्रशेखर वेंकटरामन